CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

प्राचीन भारत में दास प्रथा

डा० अनुपमा गोदारा
सहायक आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय, विद्याधर नगर, जयपुर
Email- Anupamagodara81@gmail.com, Mobile- 9784661603

First draft received: 15.05.2024, Reviewed: 25.05.2024, Final proof received: 26.06.2024, Accepted: 18.06.2024

सारांश

दासता सम्बन्धित साक्ष्यों के अनुशीलन से प्रमाणित होता है कि अति प्राचीन काल से ही विश्व की कई देशो अथवा संस्कृतियों में विद्यमान रही है और आज भी कुछ देशों में यह प्रचलित है जहां तक दास का तात्पर्य है, इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि दास दूसरे द्वारा अधिकृत और अधिकांशतः या पूर्णतः अधिकार एवं स्वतंत्रता से रहित होता है इस प्रकार नियमानुसार वह किसी अन्य व्यक्ति की निजी सम्पत्ति होता है। यह अपने स्वामी की इच्छा पर आश्रित या निर्भर रहता है जो उसे किसी भी प्रकार के कार्य को करने के लिए मजबूर कर सकता है और कम से कम सिद्धान्त उसे उसके जीवन से भी वंचित कर सकता है।[5]

मुख्य शब्द : *अधिकार, स्वतंत्रता. दासता आदि.*

प्रस्तावना

इतिहास के आरम्भ से ही दासता की अवधारणा मानव जीवन के मध्य व्यवहृत होती रही हैं। समस्त प्राचीन सभ्यताओं के सामाजिक आर्थिक ढांचे का यह एक सार्वभौमिक सत्य रहा है।। यथा रोम[1], यूनान[2], मध्य पूर्व[3], मिस्त्र, चीन, जापान, भारत[4] आदि। दासता एक अतिप्राचीन संस्था है, जिसकी उत्पत्ति का एक विशेष समय निर्धारित करता सम्भव नहीं है, विश्व के अन्य देशो के समान भारत में भी इसकी उत्पत्ति प्राचीनतम युद्ध के कानून से जुड़ी हुई है।

दासता सम्बन्धित साक्ष्यों के अनुशीलन से प्रमाणित होता है कि अति प्राचीन काल से ही विश्व की कई देशो अथवा संस्कृतियों में विद्यमान रही है और आज भी कुछ देशों में यह प्रचलित है जहां तक दास का तात्पर्य है, इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि दास दूसरे द्वारा अधिकृत और अधिकांशतः या पूर्णतः अधिकार एवं स्वतंत्रता से रहित होता है इस प्रकार नियमानुसार वह किसी अन्य व्यक्ति की निजी सम्पत्ति होता है। यह अपने स्वामी की इच्छा पर आश्रित या निर्भर रहता है जो उसे किसी भी प्रकार के कार्य को करने के लिए मजबूर कर सकता है और कम से कम सिद्धान्त उसे उसके जीवन से भी वंचित कर सकता है।[5]

लगभग 8000 BC के नीचले मिस्त्र के प्राक् एतिहासिक कब्रों से पता चलता है कि लीबियन लोगो ने सैनो को दास कबीलो के रूप में व्यवहृत करते थे। चूंकि दासता सामाजिक स्तरीकरण की समस्या है अतः आखेटक संग्राहक से जुड़े लोगो में इस व्यवस्था के अस्तित्व की कल्पना दुर्लभ है। व्यापक दासता के लिए आर्थिक अतिरेकता तथा उच्च जनसंख्या घनत्व की दशा अपेक्षित है इन प्रवृतियों को देखते हुए यही माना जा सकता है कि दासता के प्रचलन की परिकल्पना कृषि के अविष्कार के बाद नवपाषाण काल के दौरान लगभग 8000 BC में चरितार्थ हुई।

यूनानी आदि कवि होमर (ई.पू. 900 के लगभग) के महाकाव्यों इलियड व ओडिसी में भी दासता के अस्तित्व तथा उसके नैतिक पतन का उल्लेख है। यूनान में दास बहुत बडी संख्या मे थे तथा ऐसा माना जाता है कि एथेंस में दासों ही संख्या स्वतन्त्र नागरिकों से भी अधिक थी। यूनानी समाज व राज्य में दासों की एक निश्चित व महवपूर्ण भूमिका थी इसे प्लेटो तथा उरस्तू जैसे विचारकों ने दार्शनिक आधार प्रदान किया। प्लेटो ने अपनी कृति ''रिपब्लिक''[6] में दासों की चर्चा प्रमुखता से की है इसके आधार पर आधुनिक इतिहासकारों जैसे–सैवाइन[7], डनिंग[8] बार्कर[9] ने अपनी कृतियों में अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रतिपादित किये हैं।

जहाँ तक भारत में इसकी उत्पति का प्रश्न है तो इसे दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। प्रथम तो साहित्यिक साक्ष्यों में ऋग्वेद में सर्वप्रथम दास प्रथा की उत्पत्ति का प्रमाण मिलता है जबकि दूसरा दृष्किोण पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित है।

तदनुसार इसका उद्भव सैंधव काल से माना जाता है क्योंकि इससे पूर्व प्रागैतिहासिक युग की अर्थव्यवस्था दास प्रथा के प्रादुर्भाव के लिए नितान्त अनुपयुक्त थी। व्हीलर जैसे विद्वानों ने मोहनजोदडों के निकट प्राप्त 17 बैरकनुमा भवनों की दो पंक्तियों के आधार पर हड़प्पाई नगरों में कम से कम तीन सामाजिक वर्गो शासक, व्यापारी, कृषक के साथ–साथ चौथे वर्ग के रूप में दास की परिकल्पना पेश की है।[10] देशराज चानना का मानना है कि उस काल के समाज में घरेलू दासों के अतिरिक्त वैतनिक दास भी थे।[11]

वैदिक काल में दास प्रथा के स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में आये दास, दस्युओं व दासियों को प्रायः अनार्य माना जाता है जो आर्यों के विरोधी थे।[12] बाशम ने दास शब्द का प्रयोग आक्रमणकारियों द्वारा पराजित किये गये प्राग्वैदिक अनार्य भारतीयों के लिए किया है।[13] देशराज चानना दास दस्यु को पश्चिमोत्तर भारत में रहने वाली जनजातियाँ मानते है, जिन्हें आर्यों ने जीतकर दास बना लिया।[14]

ऋग्वेद में दास–दस्युओं तथा दासियों को अब्रह्मन, अदेवयुः अयज्वन, अपव्रत, अन्यव्रत, मृधवाच, अनासा, आरि विशेषणों से युक्त बताया गया है। ऋग्वेद में ऋण की अदायगी न मरने वाले, जुए में हारे, युद्ध में पराजित बने दासों का उललेख हैं इसमें सर्वप्रमुख कारण युद्ध था। वैदिक ग्रन्थों में कई उल्लेखों से दासियों की बड़ी संख्या में होना प्रमाणित होता है। उदाहरणार्थ पुरुकुत्स के पुत्र त्रास्दस्यु ने एक ऋषि को 50 दासियाँ उपहार में दी थी।[15]

वेदोत्तरकाल या बौद्धकाल (6ठीं शताब्दी ईसा.पू.) द्वितीय नगरीकर के फलस्वरूप उत्तर भारत में बड़े–बड़े क्षेत्रीय राज्यों तथा अनेक नगरों का उदय हुआ एवं कृषि, उद्योगों एवं व्यापार–वाणिज्य की प्रगति हुई। इसी काल में लोहे तथा मुद्रा के प्रचलन से नगरीकरण को बढ़ावा मिला। फलस्वरूप दास–दासियों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। शासक, ब्राह्मण, श्रेष्ठि आदि विभिन्न कार्यो के लिए दास–दासियों को रखते थे। यहाँ तक कि वैशाली की नगरवधू आम्रपाली जैसी गणिकाएं भी भारी संख्या में दास–दासियों को रखते थे।[16]

मौर्यकाल में मेगस्थनीज ने दास–प्रथा के अस्तित्व को नकारा है किंतु सत्य नहीं है क्योंकि अन्य साक्ष्यों स्ट्रेंबो, आनेजिक्रिटस, कौटिल्य तथा अशोक के अभिलेख से यह स्पष्ट होता है कि इस समय दास विभाग सूत्राध्यक्ष के अधीन होता था।

भारत में दास प्रथा पर सर्वप्रथम 'दास कल्प' नाम से अलग अध्याय कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में उल्लेख किया है। कौटिल्य[17] ने 9 प्रकारों के दासो का उल्लेख किया है। मौर्योत्तर कालीन स्मृतिकालीन अनेक साक्ष्यों से दास–दासियों के बारे कथानक मिले है। मनु[18] ने 7 प्रकार के दासों का उल्लेख किया गया है।

गुप्तकाल में दास प्रथा पूर्ववर्ती काल की अपेक्षा कुछ दुर्बल हो गयी। तत्युगीन स्मृतिकारों ने लोगों को बलात् दास बनाने का विरोध किया है।[18] इस समय अर्थव्यवस्था में कृषि योग्य जमीन के विस्तार और आंशिक रुप से सामंतवाद के प्रतिष्ठित हो जाने से श्रमिकों की मांग बहुत बढ़ गई। फलस्वरूप बहुत से दास कृषि मजदूरों या श्रमिकों के रूप में बदल गये। तत्कालीन स्मृतिकार नारद[19] ने 15 के प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।

गुप्तोत्तरकाल या पूर्वमध्यकाल (600 ई.–1200 ई.) के साक्ष्यों जैसे की इत्सिंग, मेधातिथि, विज्ञानेश्वर, अपरार्क, हेमचंद्र, कल्हण, क्षेमेन्द्र आदि से तत्युगीन दास प्रथा पर प्रकाश पड़ता है। विवेचित काल में दास–दासियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई जिसका प्रमुख कारण था–सांमतवाद की चरमावस्था, युद्ध में बने में दास तथा मुस्लिम आक्रमण। इस काल में स्वतंत्र शासक, सामंत, श्रेष्ठि, तथा गणिकाएँ[20] भी दास–दासिया रखते थे। भूमिदानों की बड़ती संख्या के कारण कृषि दासों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। यही नहीं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी दास व्यापार भारत के साथ आरम्भ हो गया, समइच्छकथा, कथासरित्सार, लेखापद्धति जैसे ग्रन्थ दासों के व्यापार के प्रमाण उपलब्ध कराते है।[21]

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि इतिहास में जेसे ही वर्ग–विभाजन तथा उत्पादन अतिरेक की स्थिति उत्पन्न हुई दास प्रथा अस्तित्व में आ जाती है तथा निरन्तर विभिन्न कारणों' से विकसित तथा मजबूत संख्या बनती जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इनसाइक्लोपेडिया, ब्रिटेनिका, पृ० 217
2. इनसाइक्लोपेडिया, ब्रिटेनिका, पृ० 217
3. इनसाइक्लोपेडिया ऑफ सोशल साइंस, पृ० 75–77
4. इनसाइक्लोपेडिया ऑफ सोशल साइंस, पृ० 75–77
5. फिनले, एम–आई, स्लेवरी इन क्लासिकल एन्टी क्यूटी, 1961
6. वार्कर, सर अर्नेस्ट, द पोलिटिकल थॉट ऑफ प्लेटो एण्ड अरिस्टोटल, न्यूयार्क 1959, पृ० 65
7. सेबाइन, जार्ज एच, ए हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थ्योरी एंशिएण्ट एण्ड मिडाईवल, न्यूयार्क 1962, पृ० 87
8. डंनिग, डस्यू.ए. द हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थ्योरी, लंदन 1972, पृ० 71
9. डंनिग, डस्यू.ए. द हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थ्योरी, लंदन 1972, पृ० 71
10. मार्टिन व्हीलर, इंडस सिविलाईजेशन, 1952 लंदनः पृ० 112
11. चानना देवराज, प्राचीन भारत में दास प्रथा हिन्दी मा. का. नि. 1998. पृ० 22–23
12. मजूमदार और पुशलकर (स.) वैदिक एज, पृ० 253–54
13. बाशम ए.एल. द वंडर दैट वाज इण्डिया पृ० 152
14. ऋग्वेद, 8/19/26
15. जातक पृ० 428
16. अर्थशास्त्र, 3/13
17. मनुस्मृति 8/415
18. नारद, 5/26–28
19. स्कन्दपुराण, 20/29–35
20. विकं आंद्रे, अल हिंद द मेकिंग ऑफ इण्डो इस्लामिक वर्ल्ड, आक्सफोर्ड प्रेस 1990, पृ० 1–24